University in News on 09 June 2021

PIONEER PAGE 3

नई शिक्षा नीति के तहत स्नातक स्तर पर चार वर्षीय पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नई शिक्षा नीति के तहत लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर चार वर्षीय पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। लखनऊ विश्वविद्यालय पहले ही नई शिक्षा नीति के दिशा निर्देशों के अनुसार परास्नातक स्तर पर चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम शुरू कर चुका है। जिसके तहत अंतर विभागीय अंतर विभागीय वैल्यू ऐडेड कोर्सेज डिजरटिशन इंटर्नशिप और फील्ड वर्क जैसे कोर्स लगभग हर विभाग में चलाए जा रहे हैं। विवि के प्रवक्ता प्रो दुर्गेश श्रीवास्तव के मुताबिक विश्वविद्यालय के स्नातक छात्रों को भी वैश्विक शिक्षा व इंट्रडिसीप्लिनरी अप्रोच का लाभ प्राप्त हो इसलिए विश्वविद्यालय स्नातक स्तर पर भी नई शिक्षा नीति के तत्व को लाने जा रहा है। आज एक महत्वपूर्ण बैठक में 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की शुरुआत की गई। बैठक में प्रोफेसर तृप्ता त्रिवेदी, प्रोफेसर आरके महेश्वरी, प्रोफेसर अरविंद अवस्थी, प्रोफेसर सीपी सिंह, प्रोफेसर पूनम टंडनए प्रोफेसर राकेश चंद्र, प्रोफेसर मनुका खन्ना, प्रोफेसर विवेक प्रसाद, प्रोफेसर अरुण सेठी, प्रोफेसर अमिता बाजपेई और प्रोफेसर पीयूष भार्गव शामिल थे। बैठक में फैसला हुआ कि प्रस्तुत स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम को संशोधित कर उसे नई शिक्षा नीति के अनुसार बनाने के लिए मेजर कोर्सेज के साथ माइनर इंट्राध्इंटर डिपार्टमेंट इलेक्टिव भी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जाएंगे। साथ ही विद्यार्थियों के पास को करिकुलर कोर्स वोकेशनल कोर्स करने का भी अवसर होगा। विद्यार्थियों को प्रोग्रेसिव रिसर्च की तरफ अग्रसर करने के लिए 4 वर्षीय स्नातक के नए पाठ्यक्रम में माइनर प्रोजेक्ट व रिसर्च मेथाडोलॉजी भी पढ़ाई जाएगी और साथ ही इंटर्नशिप करने व डिजरटिशन लिखने का भी मौका दिया जाएगा।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम होगा प्रभावी

माइनर, इंट्रा, इंटर डिपार्टमेंट का भी मिलेगा लाभ, डीन व शिक्षकों की हुई अहम बैठक

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। नई शिक्षा नीति (एनईपी) के तहत लखनऊ विश्वविद्यालय स्नातक स्तर पर चार वर्षीय पाठ्यक्रम को प्रभावी बनाएगा और इसके लिए पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी भी शुरू कर दी गई है। इस क्रम में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पर चर्चा के लिए मंगलवार को विवि के डीन व शिक्षकों की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई।

बैठक में यह निर्णय लिया गया कि वर्तमान स्नातक पाठ्यक्रम को संशोधित कर उसे नई शिक्षा नीति के अनुसार बनाने के लिए मेजर कोर्सेज के साथ माइनर, इंट्रा, इंटर डिपार्टमेंट व इलेक्टिव का अवसर भी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जाएंगे। साथ ही विद्यार्थियों के पास को-करिकुलर कोर्स, वोकेशनल कोर्स करने का भी अवसर होगा। विद्यार्थियों को प्रोग्रेसिव रिसर्च की तरफ बढ़ाने के लिए 04 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम में माइनर प्रोजेक्ट व रिसर्च मेथाडोलॉजी भी पढ़ाई जाएगी।

साथ ही इंटर्नशिप करने व डिजरटेशन लिखने का भी मौका दिया जाएगा। यह पाठ्यक्रम सेमेस्टर सिस्टम के अनुसार होगा और हर सेमेस्टर 24 क्रेडिट का होगा। विश्वविद्यालय एनईपी के अनुसार पीजी में पहले ही सीबीसीएस सिस्टम लागू कर चुका है। जहां विद्यार्थियों को इंटर डिपार्टमेंट वैल्यू एडेड कोर्सेज, डिजरटेशन, इंटर्नशिप और फील्ड वर्क हर विभाग में कराया जा रहा है। अब वह स्नातक छात्रों को भी वैश्विक शिक्षा व इंटर डिसीप्लिनरी एप्रोच का लाभ देने की कवायद कर रहा है। बैठक में प्रो. तृप्ता त्रिवेदी, प्रो. आरके महेश्वरी, प्रो. अरविंद अवस्थी, प्रो. सीपी सिंह, प्रो. पूनम टंडन, प्रो. राकेश चंद्रा, प्रो. मनुका खन्ना, प्रो. विवेक प्रसाद, प्रो. अरुण सेठी, प्रो. अमिता बाजपाई और प्रो. पीयूष भार्गव शामिल थे।

कॉलेज प्राचार्यों ने किया विवि के निर्णय का स्वागत

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा सहयुक्त कॉलेजों में स्नातक स्तर के शिक्षकों को शोध का अवसर देने की कवायद शुरू करने का कॉलेज प्राचार्यों ने स्वागत किया है। मंगलवार को विश्वविद्यालय के संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों की ऑनलाइन हुई बैठक में सभी का यह कहना था कि स्नातक महाविद्यालय के शिक्षकों में गुणवत्ता में कोई कमी नहीं है। बल्कि शोध न करवा पाने से कई गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों को करियर में नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने इसके इसके लिए आवश्यक सुविधाएं बेहतर करने का भी आश्वासन दिया। लविवि के डीन एकेडमिक्स प्रो. राकेश चंद्रा एवं डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. पूनम टंडन ने कॉलेजों की सकारात्मक सोच का स्वागत किया। बता दें कि नई शिक्षा नीति के अनुसार शोध को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने हाल ही में 05 सदस्य समिति का गठन किया है। जो सभी संबंधितों से इस पर बात कर अपनी रिपोर्ट देगी।

फार्माकोलॉजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज को सैद्धांतिक सहमति

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज के अंतर्गत फार्माकोलॉजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज विभाग को हरी झंडी मिल गई है। मंगलवार को फार्मेसी काउंसिल ने ऑनलाइन बैठक में इन विभागों को शुरू करने के लिए हरी झंडी दे दी है। हालांकि इसके लिए विवि से एक अंडरटेकिंग ली गई है। विवि ने फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया में इसके लिए आवेदन किया था। काउंसिल ने प्राथमिक तौर से विवि को अनुमति दे दी है। काउंसिल ने विवि से एक अंडरटेकिंग भी ली है कि पीसीआई के परीक्षण से पहले विवि फार्माकोलॉजी के पाठ्यक्रम में जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर, इक्विपमेंट एवं शिक्षकों की भर्ती का काम पूरा कर लेगा। विवि ने पिछले दिनों उक्त इंस्टीट्यूट की शुरुआत के लिए पीसीआई में आवेदन किया था। जहां बीफार्मा व डीफार्मा कोर्स शुरू किए जाएंगे। इनकी पढ़ाई चार विभागों के अंतर्गत होगी। पीसीआई द्वारा विभागों को हरी झंडी देने के बाद नए सत्र 2021-22 के शैक्षणिक सत्र में ही इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेस में इन दो पाठ्यक्रमों में प्रवेश शुरू हो जाएगा। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने खुशी जताई और पीसीआई द्वारा दी गई अनुमति का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि लखनऊ विश्वविद्यालय प्रदेश के छात्रों को रोजगारपरक शिक्षा उपलब्ध कराने में सक्षम होगा। उन्होंने कहा कि हम इस इंस्टीट्यूट में बेहतर संसाधन व लैब आदि की सुविधा उपलब्ध कराने का पूरा प्रयास करेंगे। (माई सिटी रिपोर्टर)

NBT PAGE 4

शिक्षा की खबरें | लविवि में अब राज्य भर के विद्यार्थी फार्माकॉलजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज की कर सकेंगे पढ़ाई

फार्मेसी कोर्स पढ़ाने के लिए पीसीआई ने दी प्राथमिक अनुमति

■ एनबीटी, लखनऊ

फार्मेसी की पढ़ाई करवाने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय को फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई), दिल्ली ने प्राथमिक तौर से अनुमति दे दी है। विवि को अब पीसीआई के परीक्षण से पहले फार्माकॉलजी के पाठ्यक्रम में जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर, इक्विपमेंट और शिक्षकों की भर्ती का काम पूरा करना है। सब कुछ ठीक रहा तो लविवि में अब राज्य भर के विद्यार्थी फार्माकॉलजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज की पढ़ाई कर सकेंगे।

लविवि प्रवक्ता दुर्गेश श्रीवास्तव के मुताविक्र पीसीआई की इस अनुमति से संस्थान में दो स्व-वित्तीय पाठ्यक्रम 100 सीटों के साथ फार्मेसी (बीफार्मा) में स्नातक और 60 सीटों के साथ फार्मेसी में डिप्लोमा (डीफार्मा) का प्रस्ताव भी रखा गया है। पीसीआई से दी गई इस अनुमति के वाद उम्मीद है की 2021-22 के शैक्षणिक सत्र में ही इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज में इन दो पाठ्यक्रमों पर भर्ती शुरू कर दी जाएगी।

> पीसीआई से मिली अनुमति का स्वागत है। उम्मीद है कि लविवि यूपी के छात्रों के लिए एक नई रोजगार और शिक्षा के आयाम को उपलब्ध करवाने में सक्षम रहेगा। -प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति, लविवि

शोध के लिए हाथ मिलाएंगे एलयू से संबद्ध कॉलेज!

■ एनबीटी, लखनऊः नई शिक्षा नीति के तहत शोध को बढ़ावा देने के लिए एलयू से संबद्ध कई कॉलेज मिलकर काम कर सकते हैं। एलयू की इस मुहिम के तहत पिछले दिनों हुई बैठक में नेताजी सुभाष राजकीय महिला महाविद्यालय, डीएवी डिग्री कॉलेज समेत कई कॉलेजों के प्राचार्यों ने हिस्सा लिया। डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. पूनम टंडन के मुताबिक, बैठक में इस पर भी चर्चा हुई कि शोध के लिए किसी शिक्षण संस्थान में सुविधाओं कमी है तो दूसरे संस्थान की मदद से इसे पूरा किया जा सकता है। लविवि के प्रवक्ता दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि शोध को बढ़ावा देने के लिए वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने पांच सदस्य समिति बनाई है, जो कॉलेजों में शोध की संभावना पर रिपोर्ट देगी।

नई शिक्षा नीति के तहत तैयार किया जाएगा स्नातक पाठ्यक्रम

■ एनबीटी, लखनऊः नई शिक्षा नीति के तहत लखनऊ विश्वविद्यालय ने स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम वनाने की तैयारी शुरू कर दी है। यह पाठ्यक्रम सेमेस्टर सिस्टम के अनुसार होगा। हर सेमेस्टर 24 क्रेडिट का रहेगा। लविवि पहले ही नई शिक्षा नीति के दिशा-निर्देशों के तहत परास्नातक स्तर पर चॉइस वेस्ड क्रेडिट सिस्टम लागू कर चुका है। इसके तहत अंतर विभागीय, वैल्यू ऐडेड कोर्सेज, डिजरटिशन, इंटर्नशिप और फील्ड वर्क जैसे पाठ्यक्रम लगभग हर विभाग में चलाए जा रहे हैं।

लविवि ने शुरू की तैयारी

लविवि प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव ने वताया कि मंगलवार को हुई वैठक में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की गई। इसी क्रम में विवि के स्नातक छात्रों को भी वैश्विक शिक्षा और इंटरडिसिप्लिनरी अप्रोच का फायदा हो, इसलिए विवि स्नातक स्तर पर भी नई शिक्षा नीति के तत्व को लाने जा रहा है। वैठक में फैसला लिया गया कि प्रस्तुत स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम को संशोधित कर, उसे नई शिक्षा नीति के तहत वनाने के लिए मेजर कोर्सेज के साथ माइनर इंटर डिपार्टमेंट इलेक्टिव भी विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाए जाएंगे।

HINDUSTAN PAGE 6

एलयू:फार्मास्यूटिकल पढ़ाने की मंजूरी मिली

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय ने हाल ही में यह घोषणा की थी कि एलयू बहुत जल्द फार्माकोलॉजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज की पढ़ाई भी प्रदेश के छात्रों को उपलब्ध करवाने जा रहा है। फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया की ऑनलाइन पर्सनल हियरिंग कमेटी मीटिंग के तहत काउंसिल ने प्राथमिक तौर से विश्वविद्यालय को अनुमति दे दी है। संस्थान में दो स्व-वित्तीय पाठ्यक्रम -100 सीटों के साथ फार्मेसी (बीफार्मा) में स्नातक और 60 सीटों के साथ फार्मेसी में डिप्लोमा (डीफार्मा) का प्रस्ताव अभी रखा गया है।

i-NEXT PAGE 4

फॉर्माकोलॉजी की पढ़ाई होगी एलयू में

LUCKNOW (8 June): लखनऊ यूनिवर्सिटी में अब फॉर्माकोलॉजी और फॉर्मास्यूटिकल साइंसेज की पढ़ाई भी होगी. इस संदर्भ में यूनिवर्सिटी ने फॉर्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया में आवेदन किया था जिस मंजूरी मिल गई है. फॉर्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया के परीक्षण से पहले फॉर्माकोलॉजी के कोर्स में जरूरी संसाधनों एवं शिक्षकों की भर्ती का समस्त काम पूरा किया जाएगा. संस्थान में दो स्ववित्तीय कोर्स 100 सीटों के साथ, फॉर्मेसी बीफॉर्मा में स्नातक और 60 सीटों के साथ फॉर्मेसी में डिप्लोमा का प्रस्ताव रखा गया है. वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने कहा कि इससे छात्रों को नई दिशा के साथ रोजगार भी मिलेगा.

पीसीआई ने एलयू को दी फार्माकोलॉजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज की मंजूरी

● सत्र 2021-22 से होगा कोर्स का संचालन, 100 सीट पर दाखिला

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) ने लखनऊ विश्वविद्यालय को फार्माकोलॉजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज की पढ़ाई शुरू करने पर सहमति दे दी है। कोर्स शुरू करने को लेकर विवि के आवेदन पर मंगलवार को एक ऑनलाइन पर्सनल हियरिंग कमिटी मीटिंग के तहत काउंसिल ने प्राथमिक तौर से विश्वविद्यालय को अनुमति दी है।ऑनलाइन हियरिंग के दौरान विश्वविद्यालय ने भी यह अंडरटेकिंग दिया है कि पीसीआई के परीक्षण से पहले विश्वविद्यालय फार्माकोलॉजी के पाठ्यक्रम में जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर, इक्विपमेंट एवं शिक्षकों की भर्ती का समस्त काम पूरा कर लिया जाएगा। विवि के प्रवक्ता प्रो दुर्गेश श्रीवास्तव के मुताबिक पीसीआई की अनुमति से विश्वविद्यालय का इंस्टीट्यूट ऑफफार्मास्यूटिकल साइंसेज बनाने की तैयारी में एक नई ऊर्जा का संचालन हुआ है। संस्थान में दो स्व वित्तीय पाठ्यक्रम 100 सीटों के साथ बीफार्मा में स्नातक और 60 सीटों के साथ डीफार्मा का प्रस्ताव अभी रखा गया है। पीसीआई द्वारा प्रदान की गई इस अनुमति के पश्चात उम्मीद है की 2021-22 के शैक्षणिक सत्र में ही इंस्टिट्यूट ऑफ़ फार्मास्यूटिकल साइंसेस में इन 2 पाठ्यक्रमों पर भर्ती शुरू कर दी जाएगी। इस संदर्भ में विवि के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने कहा कि प्रदेश और देश भर के छात्रों के हित में पीसीआई द्वारा दी गई अनुमति का वह स्वागत करते हैं और उम्मीद करते हैं कि लखनऊ विश्वविद्यालय प्रदेश के छात्रों के लिए एक नई रोजगार व शिक्षा के आयाम को उपलब्ध कराने में सक्षम रहेगा।

महाविद्यालयों में शोध के निर्णय का प्राचार्यों ने किया स्वागत

लखनऊ। महाविद्यालयों के जरिये शोध को बढ़ावा देने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय की तरफ से की जा रही पहल का कालेजों ने स्वागत किया है। कालेजों का कहना है कि इससे शोध होने के चलते शिक्षकों के करियर की राह में आ रही बाधा समाप्त हो जाएगी। मंगलवार को विवि की तरफ से गठित 5 सदस्यीय टीम ने आज विश्वविद्यालय के संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य की एक बैठक की। बैठक में सभी उपस्थित प्राचार्य ने एक स्वर में इसका स्वागत किया और सभी ने कुलपति को उनके सकारात्मक सोच और शोध के प्रति निष्ठा व श्रद्धा को सराहा। सभी का यह मत था कि स्नातक महाविद्यालय के शिक्षकों में किसी भी प्रकार से गुणवत्ता में कोई कमी नहीं है बल्कि शोध न करवा पाने की वजह से कई गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों के करियर में उन्हें नुकसान का सामना करना पड़ता है। बैठक में यह बात भी कही गई कि शोध कराने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर लैबोरेट्री फैसिलिटी या लाइसेंस्ड सॉफ्टवेयर से ज्यादा सोच कराने की इच्छा मायने रखती है। बैठक में मौजूद सभी महाविद्यालयों ने छात्र हित में स्नातक महाविद्यालयों में शोध कराते वक्त इस तरीके की साझेदारी पर जोर दिया।

DAINIK JAGRAN PAGE 5

एनईपी के तहत बनेगा स्नातक का पाठ्यक्रम

जासं, लखनऊ : नई शिक्षा नीति के तहत लविवि ने स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। मंगलवार को बुलाई गई बैठक में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पर विस्तार से चर्चा हुई।

विवि पहले ही नई शिक्षा नीति के दिशा निर्देशों के अनुसार परास्नातक स्तर पर च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम शुरू कर चुका है। जिसके तहत अंतर विभागीय वैल्यू एडेड कोर्सेज डिजरटिशन इंटर्नशिप और फील्ड वर्क जैसे कोर्स हर विभाग में चलाए जा रहे हैं। इसी क्रम में विवि में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम तैयार करने पर बैठक हुई। तय हुआ कि स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम को संशोधित कर उसे नई शिक्षा नीति के अनुसार बनाने के लिए मेजर कोर्सेज के साथ माइनर इंट्रा/इंटर डिपार्टमेंट इलेक्टिव भी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जाएंगे। वहीं, विद्यार्थियों को प्रोग्रेसिव रिसर्च की तरफ अग्रसर करने के लिए चार वर्षीय स्नातक के नए पाठ्यक्रम में माइनर प्रोजेक्ट व रिसर्च मेथाडोलाजी भी पढ़ाई जाएगी। बैठक में प्रो. तृप्ता, प्रो. आरके महेश्वरी, प्रो. अरविंद, प्रो. सीपी सिंह, प्रो. पूनम मौजूद रहीं।

फार्मास्यूटिकल साइंसेज की पढ़ाई जल्द

लविवि की ओर से हाल ही में फार्माकोलाजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज की पढ़ाई को लेकर की गई घोषणा पर फार्मेसी काउंसिल आफ इंडिया ने प्राथमिक तौर पर विवि को अनुमति दे दी है। आनलाइन पर्सनल हियरिंग कमेटी मीटिंग में काउंसिल ने विवि को अनुमति दी है।

'लखनऊ विवि ने कहा, शोध के लिए सुविधाएं साझा करें महाविद्यालय'

जासं, लखनऊ : लविवि से संबद्ध महाविद्यालयों में स्नातक शिक्षकों के लिए शोध प्रक्रिया शुरू किए जाने को लेकर मंगलवार को कालेजों के प्राचार्यों की बैठक हुई। इसमें शोध के लिए कालेजों को एक दूसरे से सुविधाएं साझा करने पर जोर दिया गया। बैठक में उपस्थित प्राचार्यों का मत था कि स्नातक महाविद्यालय के शिक्षकों में किसी भी प्रकार से गुणवत्ता में कोई कमी नहीं है, बल्कि शोध न करा पाने की वजह से कई गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों के करियर में उन्हें नुकसान का सामना करना पड़ता है। वहीं, महाविद्यालयों ने छात्र हित में स्नातक महाविद्यालयों में शोध कर आते वक्त इस तरीके की साझेदारी पर जोर दिया। डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि जो भी सुझाव आएंगे, समिति अपनी आख्या में सभी प्राचार्यों के मत शामिल करेगी।

डा. भुवनेश्वरी और डा. प्रयाग नारायन बने समन्वयक

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने दो शिक्षकों को अलग-अलग विभाग का समन्वयक नियुक्त किया है। संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग के शिक्षक डा. प्रयाग नारायन मिश्र को विभाग में शैक्षणिक कार्यों के संचालन के लिए समन्वयक बनाया गया है। वहीं, शिक्षिका डा. भुवनेश्वरी भारद्वाज को अभिनव गुप्त संस्थान की जिम्मेदारी सौंपी गई है। प्रभारी कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने मंगलवार को इस संबंध में आदेश जारी कर दिए। (जासं)

RASHTRIYA SAHARA PAGE 5

लविवि : माइनर प्रोजेक्ट व रिसर्च मेथाडोलॉजी भी पढ़ाने पर रहेगा जोर

लखनऊ (एसएनबी)। लखनऊ विश्वविद्यालय में परास्नातक स्तर पर चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम शुरू कर चुका है, जिसके तहत अंतर विभागीय अंतर विभागीय वैल्यू ऐडेड कोर्सेज डिजरटिशन इंटर्नशिप और फील्ड वर्क जैसे कोर्स लगभग हर विभाग में चलाए जा रहे है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के स्नातक छात्रों को भी वैश्विक शिक्षा व इंट्रडिसीप्लिनरी अप्रोच का लाभ प्राप्त हो इसलिए विश्वविद्यालय स्नातक स्तर पर भी नई शिक्षा नीति के तत्व को लाने जा रहा है। मंगलवार को बैठक में 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पर चर्चा की गई।

बैठक में तृप्ता त्रिवेदी, आरके महेश्वरी, अरविंद अवस्थी, सीपी सिंह, पूनम टंडन, प्रो. राकेश चंद्र, मनुका खन्ना, विवेक प्रसाद, अरुण सेठी, अमिता बाजपेई और पीयूष भार्गव शामिल थे। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि प्रस्तुत स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम को संशोधित कर उसे नई शिक्षा नीति के अनुसार बनाने के लिए मेजर कोर्सेज के साथ माइनर इंट्रा/इंटर डिपार्टमेंट इलेक्टिव भी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जाएंगे। विद्यार्थियों को प्रोग्रेसिव रिसर्च की तरफ अग्रसर करने के लिए 4 वर्षीय स्नातक के नए पाठ्यक्रम में माइनर प्रोजेक्ट व रिसर्च मेथाडोलॉजी भी पढ़ाई जाएगी और साथ ही इंटर्नशिप करने व डिजरटिशन लिखने का भी मौका दिया जाएगा। यह पाठ्यक्रम सेमेस्टर सिस्टम के अनुसार होगा और हर सेमेस्टर 24 क्रेडिट का होगा।

इंफ्रास्ट्रक्चर, लैबोरेट्री फैसिलिटी की कमी के बाद भी शोध पर सहमत प्राचार्य : लखनऊ विश्वविद्यालय के संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य की एक बैठक बुलाई गई। बैठक में स्नातक स्तर तक की पढ़ाई कराने वाले महाविद्यालय के प्राचार्य ने यह माना कि उनके यहां इंफ्रास्ट्रक्चर और लैब फैसिलिटी की कमी है फिर भी वे शोध के लिए रजामंद है ० बैठक में सभी उपस्थित प्राचार्य का यह मत था कि स्नातक महाविद्यालय के शिक्षकों में किसी भी प्रकार से गुणवत्ता में कोई कमी नही है बल्कि शोध न करवा पाने की वजह से कई गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों के करियर में उन्हें नुकसान का सामना करना पड़ता है। बैठक में यह बात भी कही गई कि शोध कराने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर लैबोरेट्री फैसिलिटी या लाइसेंस्ड सॉफ्टवेयर से ज्यादा सोच कराने की इच्छा मायने रखती है और उक्त विषय में सभी हिताधिकारिओं में यही शोध कराने की इच्छा सबसे ज्यादा प्रबल है।

फार्माकोलॉजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज कोर्स को मिली अनुमति : लविवि ने हाल ही में यह घोषणा की थी कि विश्वविद्यालय फार्माकोलॉजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज की पढ़ाई भी प्रदेश के छात्रों को उपलब्ध कराने जा रहा है। इसी संदर्भ में विश्वविद्यालय ने फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया नई दिल्ली में आवेदन किया था जिस पर आज एक ऑनलाइन पर्सनल हियरिंग कमिटी मीटिंग के तहत काउंसिल ने प्राथमिक तौर से विश्वविद्यालय को अनुमति दे दी है। फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया के परीक्षण से पहले विश्वविद्यालय फार्माकोलॉजी के पाठ्यक्रम में जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर, इक्विपमेंट एवं शिक्षकों की भर्ती का समस्त काम पूरा कर लिया जाएगा। पीसीआई कि इस अनुमति से संस्थान में दो स्व-वित्तीय पाठ्यक्रम - 100 सीटों के साथ फार्मेसी (बीफार्मा) में स्नातक और 60 सीटों के साथ फार्मेसी में डिप्लोमा (डीफार्मा) का प्रस्ताव अभी रखा गया है।

AMRIT VICHAR PAGE 3

एनईपी के तहत स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी

लखनऊ। नई शिक्षा नीति (एनईपी) के तहत लविवि में स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी शुरू कर दी गई है। इस संदर्भ में आयोजित बैठक में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की शुरुआत की गई। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि प्रस्तुत स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम को संशोधित कर उसे नई शिक्षा नीति के अनुसार बनाने के लिए मुख्य कोर्सों के साथ माइनर इंट्रा/इंटर डिपार्टमेंट इलेक्टिव भी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जाएंगे। विद्यार्थियों के पास को करिकुलर कोर्स वोकेशनल कोर्स करने का भी अवसर होगा। विद्यार्थियों को प्रोग्रेसिव रिसर्च की तरफ अग्रसर करने के लिए चार वर्षीय स्नातक के नए पाठ्यक्रम में माइनर प्रोजेक्ट व रिसर्च मेथाडोलॉजी भी पढ़ाई जाएगी और साथ ही इंटर्नशिप करने व डिजरटिशन लिखने का भी मौका दिया जाएगा।

महाविद्यालय के शिक्षक भी शोध कराने को आतुर

● कुलपति की गठित समिति के समक्ष हुई शिक्षकों की बैठक

अमृत विचार, लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य की एक बैठक मंगलवार को आयोजित हुई। बैठक में उपस्थित सभी शिक्षकों ने कुलपति को उनके सकारात्मक सोच और शोध के प्रति निष्ठा को सराहा।

सभी का यह मत था कि स्नातक महाविद्यालय के शिक्षकों में किसी भी प्रकार से गुणवत्ता में कोई कमी नहीं है बल्कि शोध न करवा पाने के कारण से कई गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों के करियर में उन्हें नुकसान का सामना करना पड़ता है। बैठक में यह बात भी कही गई कि शोध कराने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर लैबोरेट्री फैसिलिटी या लाइसेंस्ड सॉफ्टवेयर से ज्यादा सोच कराने की इच्छा मायने रखती है और इस विषय में सभी हिताधिकारियों में यही शोध कराने की इच्छा सबसे ज्यादा प्रबल है। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय व नई शिक्षा नीति का एक मूलभूत तत्व है संस्थानों के बीच कॉर्पोरेशन और हैंड होल्डिंग, अर्थात यदि किसी एक शिक्षण संस्थान में किसी फैसिलिटी की कमी है तो वह कमी दूसरे संस्थान के साथ काम कर पूरी हो सकती है। महाविद्यालयों ने छात्र हित में स्नातक महाविद्यालयों में शोध कराते समय इस तरीके की साझेदारी पर जोर दिया। इन सभी मतों को देखते हुए डीन एकेडमिक्स प्रो. राकेश चंद्र व डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. पूनम टंडन ने स्वागत किया और कहा कि प्रो. आलोक कुमार राय की गठित समिति जरूर अपनी आख्या में सभी प्राचार्यों के मत शामिल करेंगे।

लविवि को पीसीआई ने दी प्रारम्भिक सहमति

अमृत विचार, लखनऊ

लविवि ने हाल ही में यह घोषणा की थी कि विवि बहुत जल्द फार्माकोलॉजी और फार्मास्यूटिकल साइंसेज की पढ़ाई भी प्रदेश के छात्रों को उपलब्ध करवाने जा रहा है।

इसी संदर्भ में विवि ने फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया नई दिल्ली में आवेदन किया था जिस पर मंगलवार को एक ऑनलाइन पर्सनल हियरिंग कमेटी मीटिंग के तहत काउंसिल ने प्राथमिक तौर से विवि को अनुमति दे दी है। विश्वविद्यालय ने भी यह अंडरटेकिंग दिया है कि फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) के परीक्षण से पहले विवि फार्माकोलॉजी के पाठ्यक्रम में जरूरी आधारभूत ढांचा, उपकरण और शिक्षकों की भर्ती का समस्त काम पूरा कर लिया जाएगा। पीसीआई की इस अनुमति से विश्वविद्यालय का इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज बनाने की तैयारी में एक नई ऊर्जा का संचालन हुआ है। संस्थान में दो स्ववित्तीय पाठ्यक्रम 100 सीटों के साथ फार्मेसी (बीफार्मा) में स्नातक और 60 सीटों के साथ फार्मेसी में डिप्लोमा (डीफार्मा) का प्रस्ताव अभी रखा गया है। इस अनुमति के बाद उम्मीद है कि 2021-22 के शैक्षणिक सत्र में ही इंस्टिट्यूट ऑफ़ फार्मास्यूटिकल साइंसेस में इन दो पाठ्यक्रमों पर भर्ती शुरू कर दी जाएगी।

VoL PAGE 5

स्नातक स्तर पर कोर्स बनाने की तैयारी

लखनऊ। नई शिक्षा नीति एनईपी के तहत लविवि में स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम बनाने की तैयारी शुरू कर दी गई है। इस संदर्भ में आयोजित बैठक में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की शुरूआत की गई। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि प्रस्तुत स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम को संशोधित कर उसे नई शिक्षा नीति के अनुसार बनाने के लिए मुख्य कोर्सों के साथ माइनर इंट्राध्इंटर डिपार्टमेंट इलेक्टिव भी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जाएंगे। साथ ही विद्यार्थियों के पास को करिकुलर कोर्स वोकेशनल कोर्स करने का भी अवसर होगा।